शहीद-ए-आजम भगत सिंह





कवि कुलवंत सिंह

कवि परिचय



कुलवंत सिंह

रचनाकार : कवि कुलवंत सिंह

संस्करण : इंटरनेट 2011

मूल्य : Rs 100/-

प्रकाशक : कुलवंत सिंह

SHAHEED – E -AAJAM

BHAGAT SINGH By : KULWANT SINGH

दान

इस पुस्तक के लिए अथवा सेवा भावना हेतु यदि आप धन अथवा श्रम दान देना चाहें तो कृपया निम्न संस्था को सीधे संपर्क करें। **'ग्वालियर चिल्ड्रेन हास्पिटल चैरिटी**’ द्वारा **’स्नेहालय**’ एवं **’ग्वालियर हेल्थ एण्ड एजुकेशन सोसाइटी**’ तथा **’ग्वालियर हास्पिटल एण्ड एजुकेशन चैरिटेबल ट्रस्ट**’ के सहयोग से चलाए जा रहे अभिनव महती सहायता कार्यों की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है।

http://www.gwalior.hospital.care4free.net/Gwalior_Childrens_Hospital.html
http://www.gwalior.hospital.care4free.net/snehalaya_the_home_with_love.html
www.helpchildrenofindia.org.uk
Gwalior.Hospital@care4free.net

समर्पित

सर्व व्यापी ईश्वर को

कवि कुलवंत सिंह

परिचय : कवि कुलवंत सिंह

जन्म : 11 जनवरी, रूड़की, उत्तरांचल

प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा : करनैलगंज गोंडा(उ.प्र.)

उच्च शिक्षा : अभियांत्रिकी, आई. आई.टी., रूड़की
(रजत पदक एवं 3 अन्य पदक)

पुस्तकें प्रकाशित : 1- निकुंज (काव्य संग्रह)
2 - परमाणु एवं विकास (अनुवाद)
3 - विज्ञान प्रश्न मंच
4 - कण क्षेपण (प्रकाशनाधीन)
5 - चिरंतन (काव्य संग्रह)
6 - हवा नूं गीत (काव्य संग्रह निकुंज का गुजराती अनुवाद)
7 – शहीद-ए-आज़म भगत सिंह

रचनाएं प्रकाशित : साहित्यिक पत्रिकाओं, परमाणु ऊर्जा विभाग, राजभाषा विभाग, केंद्र सरकार की विभिन्न गृह पत्रिकाओं, वैज्ञानिक, विज्ञान, आविष्कार, अंतरजाल पत्रिकाओं में अनेक साहित्यिक एवं वैज्ञानिक रचनाएं

पुरस्कृत : काव्य, लेख, विज्ञान लेखों, एवं विभिन्न संस्थाओं द्वारा पुरूस्कृत, विभागीय हिंदी सेवाओं के लिए राजभाषा गौरव सम्मान

सेवाएं :'हिंदी विज्ञान साहित्य परिषद' से 10 वर्षों से संबंधित
व्यवस्थापक **'वैज्ञानिक' त्रैमासिक पत्रिका**
विज्ञान प्रश्न मंचों का परमाणु ऊर्जा विभाग एवं अन्य संस्थानों के लिए अखिल भारत स्तर पर आयोजन
क्विज मास्टर
कवि सम्मेलनो मे काव्य पाठ

संप्रति : वैज्ञानिक अधिकारी,पदार्थ संसाधन, प्रभाग, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, मुंबई - 400085

निवास : 2 डी, बद्रीनाथ, अणुशक्तिनगर, मुंबई - 400094

फोन : 022-25595378 (O) / 09819173477 (R)

ईमेल : kavi.kulwant@gmail.com / singhkw@barc.gov.in

नेट : www.kavikulwant.blogspot.com
www.kulwant.mumbaipoets.com

शहीद-ए-आजम भगत सिंह



17 वर्ष की अवस्था में भगत सिंह

शहीद-ए-आजम भगत सिंह

भारत माता जब रोती थी,
जंजीरों में बंध सोती थी .
पराधीनता की कड़ियाँ थीं,
जकड़ी बदन पर बेड़ियाँ थीं .

देश आँसुओं में रोता था,
ईस्ट इंडिया को ढ़ोता था .
भारत का शोषण होता था,
नैसर्गिक संपत्ति खोता था .

दुर्दिन के दिन गिनता था,
हर साल अकाल को सहता था .
अंग प्रत्यंग जब जलता था,
घावों से मवाद रिसता था .

बंदी बन नतमस्तक माता,
देश की हालत बदतर खस्ता,
हर पल था अंधियारा छलता,
सहमी रहती थी जब जनता .

आँसू जलधर से बहते थे,
सहमे सहमे सब रहते थे .
यौवन पतझड़ सा सूखा था,
सावन भी रूखा रूखा था .

भारत भू का कण-कण शोषित,
त्रास यातना से अपमानित .
'कल्याण - भूमि' आतंकित थी,
निज स्वार्थ हेतु संचालित थी .

राष्ट्र हीनता से जकड़ा था,
दीन दासता ने पकड़ा था .
मृत्यु प्राय सी चेतनता थी,
स्तब्ध सिसकती मानवता थी .

अवसाद गरल बन बहता था,
स्वाभिमान आहत रहता था .
गौरव पद तल त्रासित रहता,
झुका हुआ था अंबर रहता .

निष्ठुर क्रीड़ा खेली जाती,
अनय अहिंसा झेली जाती .
धन संपत्ति को लूटा जाता,
ब्रिटिश राज को भेजा जाता .

हिम किरीट की सुप्त शान थी,
पुरा देश की लुप्त आन थी .
राष्ट्र खड़ा पर शिथिल जान थी,
सरगम वंचित अनिल तान थी .

विषाद द्रवित नही होता था,
वेदन में आँसू घुलता था .
आवेग प्रबल उत्पीड़न था,
विवश कसमसाता जीवन था .

कलरव जब कर्कश लगता था,
नत दिव्य भाल जब दिखता था .
आकाश झुका सा लगता था,
चिर ग्रहण भाग्य पर दिखता था,

युगों युगों से गौरव उन्नत,
हिम का आलय झुका था अवनत .
विषम समस्या से था ग्रासित,
विकल, दग्ध ज्वाला से त्रासित .

'पुण्य भूमि' जब मलिन हुई थी,
पद के नीचे दलित हुई थी .
'तपोभूमि' संताने व्याकुल,
व्याल घूमते डसने आकुल .

हीरे, पन्ने, मणियां लूटीं,
कलियाँ कितनी रौंदी टूटीं .
आन देश की नोच खसोटी,
कृषक स्वयं न पाये रोटी .

चीर हरण नारी के होते,
भारत निधियां हम थे खोते .
वैभव सारा लुटा देश का,
ध्वस्त हुआ सम्मान देश का .

बाट जोहते सब रहते थे,
तिमिर हटाओ सब कहते थे .
भाव हृदय में सदा मचलते,
मौन परंतु सब सहते रहते .

धरती माँ धिक्कार रही थी,
रो रो कर चीत्कार रही थी .
वीर पुत्र कब पैदा होंगे ?
जंजीरों को कब तोड़ेंगे ?

’जन्मा राजा भरत यहीं क्या ?
नाम उसी से मिला मुझे क्या ?
धरा यही दधीच क्या बोलो ?
प्राण त्यागना अस्थि दान को ?

बोलो बोलो राम कहाँ है ?
मेरा खोया मान कहाँ है ?
इक सीता का हरण किया था,
पूर्ण वंश को नष्ट किया था !

बोलो बोलो कृष्ण कहाँ है ?
उसका बोला वचन कहाँ है ?
धर्म हानि जब भारत होगी,
जीत सत्य की फिर फिर होगी !

अर्जुन अब कब पैदा होगा,
भीम गदा धर कब लौटेगा ?
पुण्य भूमि बेहाल हुई क्या ?
वीरों से कंगाल हुई क्या ?

नृपति अशोक चंद्रगुप्त कहाँ ?
मर्यादा भारत लुप्त कहाँ ?
कहाँ है शान वैशाली की ?
मिथिला, मगध, पाटलिपुत्र की ?

गौतम हो गये बुद्ध महान,
इस धरती पर लिया था ज्ञान .
दिया कितने देशों को दान,
संदेश दबा वह कहाँ महान ?

इसी धरा पर राज किया था,
विक्रमादित्य पर नाज किया था .
जन्मा पृथ्वीराज यहीं क्या ?
कर्मभूमि छत्रपति यही क्या ?

चेतक पर घूमा करता था,
हर पत्ता, बूटा डरता था .
घास की रोटी वन में खाई,
पराधीनता उसे न भाई .

जुल्मों की तलवार काटने,
भारत संस्कृति रक्षा करने .
चौक चाँदनी शीश कटाया,
सरे - आम संदेश सुनाया .

चिड़ियों से था बाज लड़ाया,
अजब गुरू गोबिंद की माया .
धरा धन्य थी उसको पाकर,
देश बचाया वंश लुटाकर .

वही धरा अब पूछ रही थी,
रो रो कर अब सूख रही थी .
लौटा दो मेरा स्वाभिमान,
धरती चाहती फिर बलिदान .

पराधीन की कड़ियाँ तोड़ो,
नदियों की धारा को मोड़ो .
कोना कोना भारत जोड़ो,
हाथ उठे जो ध्वंश, मरोड़ो .

सिंह नाद सा गुंजन करने,
तूफानों में कश्ती खेने .
वह अमर वीर कब आयेगा ?
मुझको आजाद करायेगा !

हर बच्चा भारत बोल उठे,
सीने में ज्वाला खौल उठे .
हर दिल में आश जगाये जो,
भूमि निछावर हो जाये जो !

हर-हर बम-बम जय घोष करो,
अग्नि क्रांति की हर हृदय भरो .
नर - नारी सब तरुण देख लें,
करना आहुति प्राण सीख लें !

बहुत हुआ अब मर मर जीना,
अनुसाल दासता की सहना .
संभव वीर न भू पे लाना ?
ताण्डव शिव को याद दिलाना !’

हृदय विदारक दारुण क्रंदन,
परम पिता ने कर आलिंगन,
परम वंद्य आत्मा आवाह्न,
भारत भेजा अपना नंदन .

बंगा लायलपुर जनपद में,
किसन, विद्यावती के घर में,
ईशा सन उन्नीस सौ सात,
सितंबर सत्ताइस की रात .

(अनुसाल=पीड़ा)

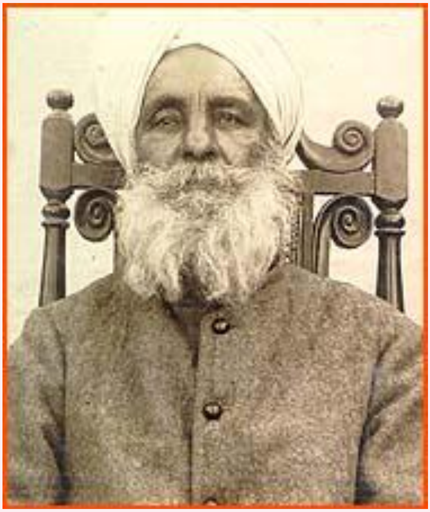
जन्म पुण्य आत्मा ने पाया,
क्रांतिकारियों के घर आया .
स्वतंत्रता के चिर सेनानी,
कुटुंब की थी यही कहानी .

सूर्य एक दमका था जग में,
भारत माता के आंगन में .
भाग्यवान बन आया था सिंह,
दादी बोली नाम भगत सिंह .



दादा सरदार अर्जुन सिंह

दादा अर्जुन सिंह वरदानी,
तीन पूत, तीनों सेनानी .
कूट कूट वीरता भरी थी,
सत्ता भी सहमने लगी थी .



पिता सरदार किसन सिंह

पिता किसन सिंह की लड़ाई,
'भारत - सोसायटी' बनाई .
उन पर डाले कई मुकदमें,
काटे ढ़ाई वर्ष जेल में .

वर्ष और दो नजरबंद थे,
गतिविधियों में पर दबंग थे .
डर कर चाचा अजीत सिंह से,
रंगून जेल भेजा यहाँ से .



माँ विद्यावती, चाचा अजीत सिंह, पिता किसन सिंह

दूजे चाचा स्वर्ण सिंह थे,
लाहौर सेंट्रल जेल बंद थे,
सही यातना, पर किया न गम,
सहते सहते तोड़ दिया दम .



बाल गंगाधर तिलक द्वारा 1907 में अजीत सिंह को सम्मान भेंट

दिखे पूत के पाँव पालने,
घर संस्कृति और माहौल ने,
बीज किये तन मन में रोपित,
देश प्रेम से अंतस शोभित .

खेल खेल में टीम बनाते,
अंग्रेजों को मार भगाते .
बने सभी बच्चों के लीडर,
गाते गीत गदर के जी भर .

पिता किसन सिंह दादा अर्जुन सिंह चाचा अजीत सिंह

चाची जब यादों में रोती,
मै हूँ ! चाची तूँ क्यों रोती ?
गोरों को मार भगाऊँगा,
चाचा को वापिस लाऊँगा .

खेल खेलता बंदूकों के,
रोपे धरती घास के तिनके .
नंद किशोर मेहता आये,
पूछे बिना वह रह न पाये .

’बाल भगत! यह क्या करते हो ?
धरती तिनके क्यों बोते हो ?’
’धरती बंदूक उगाऊँगा,
क्रांतिकारियों को बाटूँगा .

राष्ट्र को स्वतंत्र कराऊँगा,
जन-जन में प्राण जगाऊँगा .’
बात भगत की सुन दिल झूमा,
गले लगा कर माथा चूमा .

गोरों का युग निकृष्ट प्रहार,
जगती का क्रूरतम संहार .
नि:शस्त्र सभा जलियाँवाला
कई सहस्त्र को भून डाला .



जलियां वाला बाग क्रूर नरसंहार



जलियां वाला बाग में गोलियों के निशान

बारह वर्ष की थी अवस्था,
सुना बगत का ठनका मत्था .
वह पैदल बारह मील चले,
जलियाँ वाला बाग में पहुँचे .

रक्त रंजित मिट्टी उठाकर,
चूमा उसको भाल लगाकर .
शीशी में संभाल सहेजना,
प्राण प्रतिज्ञा से अराधना .



भगत सिंह 11 वर्ष की अवस्था



नेशनल कालेज लाहौर- भगत सिंह पीछे दायें से चौथे

कदम जवानी धरा भगत ने,
दादा, दादी, माँ, चाची ने,
कहा सभी ने मिल इक स्वर में,
बाँधो इसको अब परिणय में .

घर में पहले बात छिड़ी थी,
गली गाँव फिर घूम चली थी .
यौवन में पग रखता जीवन,
मधुर उमंग से खिलता तन मन .

मंद पवन जब मधु रस भरता,
दर्पण यौवन रस निहारता .
तन मन कलियाँ मादक खिलतीं,
प्रेम लहर जब लह-लह चलती .

शबनम जब आहें भरती है,
खुशबू भीनी सी उठती है .
लेते अरमाँ जब अंगड़ाई,
प्रीत वदन दिल में शहनाई .

फूल करें जब दिल मतवाला,
प्रेम सुधा का छलके प्याला .
गान बसंती हृदय सुनाता,
तन मन को आह्लादित करता .

झन झन कर झंकार हृदय में,
पायल सी खनकार हृदय में .
खन-खन खनकें चूड़ी कंगन,
तन मन में उपजे प्रीत अगन .

उद्दाम प्रेम की सहज राह,
सुवास कुसुम नैसर्गिक चाह .
रूप आलिंगन मधु उल्लास,
नव यौवना की बाँह विलास .

यौवन देखे बस सुंदरता,
जगती में बिखरी मादकता .
प्रेम पींग ले काम हिलोरें,
छोड़ें मनसिज बाण छिछोरे .

(मनसिज = मदन)

बात भगत जब पड़ी कान में,
बांध रहे परिणय बंधन में .
खिन्न हुआ, यह कर्म नही है,
शादी मेरा धर्म नही है .



गुलाम देश है भारत मेरा,
कर्तव्य पुकार रहा मेरा .
माता मेरी जब बंदी हो,
न्याय व्यवस्था जब अंधी हो .

हथकड़ियाँ हों जब हाथों में,
बेड़ी जकड़ी जब पाँवों में .
बोल मुखर जब नही फूटते,
पथ सच्चों को नही सूझते .



बहनों का सम्मान न होता,
अपमान जहाँ पौरुष होता .
प्रतिकार शक्ति छीनी जाती,
सच्चाई धिक्कारी जाती .

आँसू भय से नही टपकते,
हाय दीन की नही समझते .
आलोक जहाँ छीना जाता,
अभिमान जहाँ रौंदा जाता .



सिंदूर जहाँ मिटाये जाते,
दीपक जहाँ बुझाये जाते .
दुर्दिन को जब देश झेलता,
बढ़ी दरिद्रता नित्य देखता .

प्रकृति संपदा भारत खोता,
दुर्भिक्ष के दिन रोज सहता .
आह, कराहें सुनी न जाती,
पीड़ा, आँख से बह न पाती .

पराधीनता श्राप बड़ा है,
दूजा कोई न पाप बड़ा है .
देश गुलामी में जकड़ा है,
जैसे गर्दन को पकड़ा है .

कर्तव्य सर्वप्रथम निभाना,
देश को आज़ादी दिलाना .
शादी की अब बात न करना,
परिणय का संवाद न करना .

देश गुलामी में जब तक है,
एक मृत्यु को मुझ पर हक है .
कोई नही बन सकती पत्नी,
मौत सिर्फ हो सकती पत्नी .

देश प्रेम का ज्वार भरा था,
रोम - रोम अंगार भरा था .
मन में शोले भड़क रहे थे,
स्वतंत्रता को तड़प रहे थे .

प्रचण्ड शक्ति संचित कर भाल,
सत्ता को चुनौती विकराल .
पवन को भर कर अपनी श्वास,
पावक उगलने का विश्वास .

कड़क विहंसती विद्युत धारा,
टूट पड़ा अंबर घन सारा .
अंग अंग अभिमान तरंगें,
लहराये नगर नगर तिरंगे .

युग का गर्जन बन कर आया,
सिंधु प्रलय वह भीषण लाया .
राष्ट्र दर्प हुंकार लगाई,
ललाट लालिमा लहू सजाई .

काल कपाल कराल कामना,
सत्ता सिमटे सिंह सामना .
भीतर भभक भर भुजा भुजंग,
धधकाई धरती धड़क धड़ंग .

अंबर पर आग लगाने को,
कंपित धरती कर जाने को,
पीड़ा की आह मिटाने को,
जब्ती को तोड़ जगाने को .

झंझा झकझोर जमाने को,
लहरों पर नाव चलाने को,
तूफानों पर चढ़ जाने को,
प्रचण्ड विरोध दिखलाने को .

भीषण अंगार जलाने को,
जंजीरों को पिघलाने को,
वाणी देने मौन क्रोध को,
अपमानों के गरल घूँट को .

(गरल = विष)

जुल्मों से लोहा लेने को,
सत्ता गोरी मटियाने को,
बन जुनून सर चढ़ जाने को,
भारत भर में छा जाने को .

देखो देखो वह आया है,
क्रांति भगत सिंह ले आया है .
सच्चा सपूत अब आया है,
क्षितिज शौर्य फिर फहराया है .

ध्वनित हुए फिर राग प्रभाती,
जन-जन में थी आशा जागी .
सुप्त राष्ट्र में प्राण भर गये,
इंकलाब के गीत बस गये .

बन आँधी ललकार लगाई,
अंग्रेज़ों की नींद उड़ाई .
हर सपूत में ज्योत जलाई,
भारत माँ को आश जगाई .

बही हवा वो आँधी की जब,
धधकी ज्वाला नगर नगर तब .
चिनगारी बन तरुण हृदय हर,
क्रांति ज्योति की फैली घर-घर .

मिली ज्योत से ज्योत अनेकों,
आँधी बन गई तूफाँ देखो .
गाँवों, नगरों, देहातों में,
विजय पताका सब हाथों में .

साइमन कमीशन जब आया,
विरोध सभी ने था जताया .
लाठी चार्ज जम कर कराई,
लाला जी ने जान गवाई .

ठान लिया था बदला लेना,
अधीक्षक सांडर्स को उड़ाना .
क्रांतिकारियों के संग मिलकर,
मारा उसे गोली चलाकर .

यौवन को अंगार बना कर,
मुकुट अभिमान देश सजाकर,
क्रांति में नई जान फूँक दी,
अखिल राष्ट्र टंकार छोड़ दी .

धुन के पक्के मतवाले जब,
चलते हैं तो फिर रुकते कब ?
पथ में काँटे, पग में छाले,
विजय प्राप्ति तक चलने वाले .

गठन 'नौजवान भारत सभा',
भर राष्ट्र प्राण आलोक प्रभा .
नस-नस में ज्वाला भभक रही,
ले अभय जवानी धधक रही .

विष जो सत्ता ने बोया था,
सिंह जहर उगलने आया था .
जो दारुण दर्द दबाया था,
वह दर्द मिटाने आया था .

बाँध कफन को निकला घर से,
सत्ता सहम गई थी डर से .
तैरा तूफाँ पर मरदाना,
चला सुनामी पर दीवाना.

नियति ने की थी घड़ी जो नियत,
कण कण जिसके लिये था सतत .
निशि दिन देखते कब से राह,
अरुण उदय होता नित ले चाह .

चंद्र किरण फिर, लगे चमकने,
नभ में तारे, लगें दमकने .
महक कब भरेगी फिर से पवन ?
आँचल फिर कब खिलेंगे चमन ?

उस क्षण को था बेचैन सागर
उस पल को था बेताब अंबर .
सुरभि मंजरी फिर से चाहे,
कल कल सरिता बहना चाहे .

भगत सिंह, बटुकेश्वर दत्त ने,
पूर्ण विश्व को जागृत करने .
सत्ता को झकझोर डालने,
सुप्त प्राणों में जान डालने .



भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त

युग युग का संदेश सुनाने,
जन जन को विश्वास दिलाने .
सूखे दीपों में घृत डालने,
हृदयों में अंगार बाँटने .

देश - भक्ति की धार बहाने,
नयी विभा की चमक जगाने .
जड़ता में चेतनता लाने,
किरणों को आलोक दिलाने .

नस नस में लावा दौड़ाने,
रोम रोम ज्वाला भड़काने .
अवनत भाल अभिमान दिलाने,
झुके गगन का शीश उठाने .

सेंट्रल असेंबली सभागार,
दो बम फोड़े लगातार .
मकसद तीनों काल हिलाना,
नहीं किसी की जान को लेना .



बटुकेश्वर दत्त

इंकलाब के नारे लगाये,
बिना अपनी पहचान छुपाये .
डटे रहे वह उसी जगह पर,
खुश थे अपनी गिरफ्तारी पर .

भारत भू ने किया अभिसार,
अंबर को फिर मिला विस्तार .
विभा गर्व से झूम रही थी,
दबी आग फिर मचल उठी थी .

जन जन में विश्वास था लौटा,
अभी अंत सत्ता का होगा .
सृष्टि कर रही अमर श्रृंगार
अखिल विश्व का बना सुकुमार .

भारत माँ का सच्चा सपूत,
हर माँ का वह बन गया पूत .
संदेश सुनाने ईश - दूत,
आया था बन कर वीर पूत .

सबकी आँखों का तारा था,
देश - भक्ति का वह नारा था .
जन जन के दिल को प्यारा था,
छटने लगा अब अंधियारा था .

गूँज उठा घर घर भगत सिंह,
राष्ट्र भक्ति प्रतीक भगत सिंह .
सागर का गर्जन भगत सिंह,
सृष्टि का श्रृंगार भगत सिंह .



जनता का विश्वास भगत सिंह,
वीरों का उल्लास भगत सिंह .
प्रलय का आधार भगत सिंह,
कण-कण में साकार भगत सिंह .

मूकों की चिंघाड़ भगत सिंह,
युग-युग की हुंकार भगत सिंह .
रुदन का प्रतिकार भगत सिंह,
शक्ति का अवतार भगत सिंह .

अरुण का आलोक भगत सिंह,
किरणों का प्रकाश भगत सिंह .
अंगारों का ताप भगत सिंह,
भारत का सरताज भगत सिंह .

युवकों का आदर्श भगत सिंह,
हृदयों का सम्राट भगत सिंह .
हर कोख की चाहत भगत सिंह,
शहादत की मिसाल भगत सिंह .

मुकदमें की जब चली कहानी,
खुद अपनी पैरवी की ठानी .
इंकलाब को देने रवानी,
जन-जन क्रांति धूम मचानी .

सोच समझ कर चाल चली थी,
अंग्रेजों को खूब खली थी .
नवज्योति की ज्वाला जली थी,
घर-घर में वह फैल चली थी .

भारत भू का कण कण दीपित,
पूर्ण राष्ट्र में क्रांति प्रज्ज्वलित .
भयभीत तिमिर था भाग रहा,
भाग्य भारती का जाग रहा .



उस बम का खोल जो असेंबली में फेंका गया

अवसर आया सब कहने का,
अपनी बातें दोहराने का .
सकल विश्व को बात सुनाई,
अंग्रेज़ों की नींद उड़ाई .

भारत में चेतनता लायी,
ज्वालामुखी ने ली अंगड़ाई .
सकल विश्व को किया अचंभित,
सृष्टि देखती थी स्तंभित .





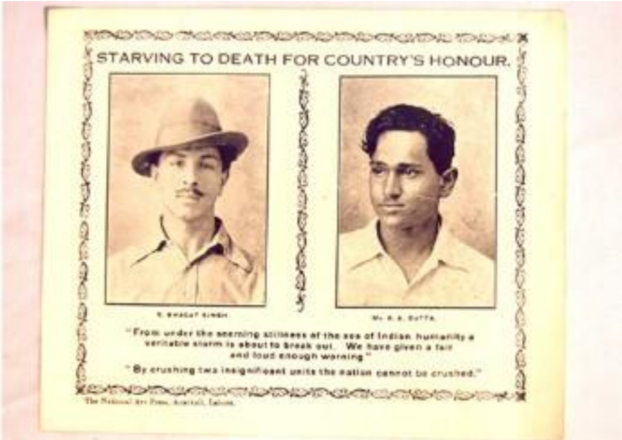
भगत सिंह के जूते और घड़ी जो उन्होने अपने क्रांतिकरी साथी जयदेव कपूर को दिये

ले हथेली शीश था आया,
नेजे पर वह प्राण था लाया .
अभिमानी था, झुका नही था,
दृढ़ निश्चय था, रुका नही था .

लाहौर जेल में कैदी थे,
क्रांतिकारी कई बंदी थे .
जेल की हालत बद बेहाल,
सुविधायें खाना बुरा हाल .

जेल में ठानी भूख हड़ताल,
बने सत्ता का जी जंजाल .
ऐतिहासिक वह भूख हड़ताल,
सबसे लंबी भूख हड़ताल .

(नेजे = भाला)



भूख हड़ताल के पोस्टर

चौंसठ दिन का वह अनशन था,
सरकार को झुकना पड़ा था .
अनशन में साथी को खोया,
जतिनदास पर जग था रोया .

पुण्य धरा पर अर्ध्य चढ़ाकर,
कुरबानी का रक्त चढ़ाकर .
अखण्ड रोष का नाद सुनाकर,
यौवन को भूचाल बनाकर .



भगत सिंह की शर्ट

देश भक्ति का रंग लगाकर,
प्रेम बीज से पेड़ उगाकर .
निज यौवन को लपट बनाकर,
जीवन को संग्राम बनाकर .

स्वतंत्र भू का स्वप्न सजाकर,
प्रचण्ड अग्नि तन मन लगाकर,
माटी खुशबू श्वास बसाकर,
प्राणों को रथ प्रलय बनाकर .

पीड़ा को आघात बना कर,
क्रूर काल को ग्रास बनाकर,
पराधीनता चिता सजाकर,
विजय पताका भू लहराकर .

घर-घर में सिंह भगत समाया,
हर जुबां पर नाम वह आया .
सत्ता सहम गई थी डर से,
शासन उखड़ गया था जड़ से .

नाम भगत सिंह जब जब आता,
रोम - रोम संचार वीरता .
सत्ता थर - थर थी थर्राई,
भगत सिंह से थी घबराई .

भगत भाई कुलबीर सिंह थे,
भगत सिंह जब जेल बंद थे,
कुलबीर ने दिखाये रंगे थे,
गतिविधियां देख सभी दंग थे .

'नौजवान भारत सभा' भार,
अपने कंधों पर लिया भार .
खूब निभाई जिम्मेदारी,
लोहा लेने की थी बारी .

गोरों का इक समारोह था,
किंग जार्ज पर उत्सव था .
पूरे शहर की बिजली काटी,
समारोह को जगमग बाँटी .

कुलबीर का आक्रोश भड़का,
वह भाई भगत की राह चला .
उत्सव की बिजली को रोका,
दस वर्ष की जेल को भोगा .

चले मुकदमें भगत सिंह पर,
और अनेक क्रांतिवीरों पर .
सत्ता ने फाँसी ठानी थी,
मुकदमों को दी रवानी थी .

भगत सिंह का आक्रोश रोष,
क्रांतिवीर का जयनाद जोश .
इंकलाब जिंदाबाद घोष,
आज़ादी का बना उदघोष .

इतिहास दिवस लो आया था,
निर्णय कोर्ट का लाया था .
जिस दिन की थे बाट जोहते,
दिन-दिन गिन कर राह देखते .

घड़ी सुहानी वह आई थी,
बासंती में रंग लाई थी .
सहमी सत्ता ने दी पुकार,
फाँसी की थी उसे दरकार .

कोर्ट फैसला तय था फाँसी,
चौबीस मार्च दे दो फाँसी .
सन एकतीस की यह थी बात
जग रहा भाग्य भारत प्रभात .

क्रांति गतिविधियों में लिप्त थे,
आभा से मुख शौर्य दीप्त थे .
'राजगुरू', 'सुखदेव', 'भगत सिंह',
फांसी लेंगे यह भारत सिंह .





भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव



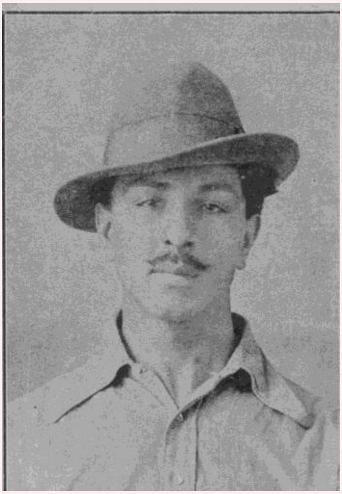
फांसी की सजा देने के लिए जज द्वारा प्रयुक्त पेन



सुखदेव की टोपी

गीत मिलन के तीनों गाते,
हँस हँस कर थे मौत बुलाते .
चोले को बासंती रंग माँ,
देख पुकार रही भारत माँ .

भारत जकड़ा जंजीरों में,
कूद पड़े तब हवन कुण्ड में .
आन बचाने यह भारत सिंह,
राजगुरू, सुखदेव, भगत सिंह .



भगत सिंह



सुखदेव



राजगुरू

सभी जुबाँ पर एक कहानी,
क्रांति वीरता भरी जवानी .
फैला जन-जन क्रांति ज्वार था,
स्वतंत्रता का ही विचार था .

अभीष्ट पूरा हुआ भगत सिंह,
गर्जन थी अब हर भारत सिंह .
पैदा कर दी हर दिल चाहत,
बिन आज़ादी मन है आहत .

मात पिता को जेल बुलाया,
बेटे ने संदेश सुनाया .
भगत देश पर होगा शहीद,
पूरी होगी मेरी मुरीद .

दुख का आँसू आँख न लाना,
समय है मेरा मुझको जाना .
पूत आपका हो बलिदानी,
अपने खूँ से लिखे कहानी .

जन्म दिया माँ तुमने मुझको,
शीश नवाऊँ शत शत तुमको .
माता-धरती, पिता-आकाश,
उनके चरणों स्वर्ग का वास .

माँ तेरा उपकार बड़ा है,
किंतु देश का फ़र्ज़ पड़ा है .
भारत माँ का कर्ज़ बड़ा है,
राष्ट्र बेड़ियों में जकड़ा है .

मचल रहे अरमाँ कुरबानी,
झड़ी लगा दे अपनी जबानी,
दे दे कर आशीष अनेकों,
घड़ी शहादत आयी देखो .

देख देख जग विस्मृत होगा,
पढ़ इतिहास चमत्कृत होगा .
मुझको इतिहास बदलना है,
अब यह साम्राज्य निगलना है .

मोल नहीं कुछ मान मुकुट का,
मोल नहीं कुछ सिंहासन का .
जीवन अर्पित करने आया,
माटी कर्ज़ चुकाने आया .

याचक बन कर मांग रहा हूँ,
तेरा दुख पहचान रहा हूँ .
लाल जो खेला तेरी गोदी,
डाल दे भारत माँ की गोदी .

तेरा तो घर द्वार क्रांति का,
तू जननी है स्रोत क्रांति का .
कोख पे अपनी कर अभिमान,
पाऊँ शहादत, दे वरदान .

एक पूत का गम मत करना,
सब तरुणों को पूत समझना .
जग में तेरा सदा सम्मान,
युगों युगों तक रहेगा मान .

खानदान की रीत निभाई,
राह क्रांति की मैने पाई .
दादा, चाचा, पिता कदम पर,
खून खौलता दीन दमन पर .

माता कर दो अब विदा विदा,
हो जाऊँ वतन पर फ़िदा फ़िदा .
रहे अभागे जो सदा सदा,
खुशियाँ हों उनको अदा अदा .

हर तरफ ध्वनित आवाज हुई,
स्वर भगत कण्ठ हर साज हुई .
भगत सिंह घर-घर में छाया,
ब्रिटिश राज भी था घबराया .

वायसराय से माफी मांगें,
भगत लिखित में माफी मांगें .
कमी सजा में हो सकती है,
उनको फाँसी रुक सकती है .

देश प्रेम में मर मिट जाना,
स्वीकार नही, क्षमा माँगना .
हमें मृत्यु भय नही दिखाना,
उसको तो है गले लगाना .

हर सपूत में चाह जगाना,
मर मिटने की राह दिखाना .
जब्ती को है तोड़ गिराना,
चिता साम्राज्यवाद जलाना .

जितने दिन भी जेल रहे थे,
जीत मृत्यु को खेल रहे थे .
पूरे जग को प्रेरित करते,
आज़ादी में जीवन भरते .

आज़ादी के वह दीवाने,
देश हेतु मर मिटने वाले .
नहीं किसी से डरने वाले,
अंगारों पर चलने वाले .

काल-चक्र पहचान लिया था,
दाम मौत का जान लिया था .
हँस-हँस जीवन वार दिया था,
आज़ादी विश्वास दिया था .

अंतिम इच्छा जब पूछी थी,
अनुरति भगत की बस यही थी .
'जन्म यहीं पर फिर हो मेरा,
सेवा - देश धर्म हो मेरा .'

'दिल से न निकलेगी कभी भी,
वतन की उल्फत मर कर भी .
मेरी मिट्टी से आयेगी,
सदा खुशबू-ए-वतन आयेगी .'

क्रांतिवीर से राज्य डरा था,
युग युग चेतन प्राण भरा था .
आंदोलन का खौफ़ भरा था,
पतन मार्ग पर अधो गिरा था .

(अनुरति = चाहत)

चौबीस को जो तय थी फाँसी,
तेईस मार्च दे दी फाँसी .
संध्या साढ़े सात समय था,
बलिदानों का अमर समय था .

पुण्य पर्व बलिदान मनाया,
हँसते - हँसते ताल मिलाया .
झूम रहे थे वह मस्ताने,
संघर्ष क्रांति के परवाने .

बारूद बना कर यौवन को,
अर्पित कर के भारत भू को .
फांसी फंदा गले लगाया,
शोलों को घर-घर पहुँचाया .

क्रांति की वेदी पर तर्पण,
यौवन फूलों सा कर अर्पण .
हँसते-हँसते न्यौछावर थे,
जय इंकलाब के नारे थे .

भारत माँ ने कर आलिंगन,
भाल सजाया रक्तिम चंदन .
कण-कण में वह व्याप्त हो गया,
भारत उसका ऋणी हो गया .

गीत सोहले संध्या गाये,
मिलन गीत चंदा ने गाये .
तारे भर ले आये घड़ोली,
सजी चांदनी की रंगोली .

सोहले : शादी पर गाये जाने वाले गीत (पंजाबी)
घड़ोली : सरोवर यां कुएं से घड़े में पानी लाकर महिलाएं दूल्हे को शादी से पहले स्नान कराती हैं

देव उठा कर लाये डोली,
बिखरा सुरभित चंदन रोली .
पुण्यात्मा का कर कर वंदन,
लोप परम सत्ता अभिनंदन .

प्रकृति चकित कर रही थी नाज़,
आकाश मगन बना हमराज .
भूला पवन था करना शोर,
सिंधु भी भूल गया था रोर .

लहरों में आज नहीं हिलोर,
गम में सूरज, नहीं है भोर .
देव नमन को भू पर आये,
आँधी तूफाँ शीश झुकाये .

अंग्रेज़ों का मन डोल रहा था,
सर चढ़ कर डर बोल रहा था .
मृत शरीर के कर के टुकड़े,
उसी समय बोरों में भरके,

ले फिरोज़पुर वहाँ जलाया,
कुछ लोगों को वहाँ जो पाया,
टुकड़े अधजले सतलज फेंक,
नौ दो ग्यारह हुए अंग्रेज़ .

देखा पास नज़ारा आकर,
हैरानी थी टुकड़े पाकर .
ग्रामीणों ने किया सत्कार,
विधिवत किया अंतिम संस्कार .

वीर भगत तुम हममें जिंदा,
वीर भगत तुम सबमें जिंदा .
हर देश भक्त में तुम रहोगे,
जिंदा हो ! जिंदा रहोगे !

स्वतंत्रता संग्राम इतिहास,
नाम भगत सिंह ध्रुव आकाश .
नाम अमर है, अमिट रहेगा,
स्वातंत्र्य वीर अक्षुण्ण रहेगा .

आविर्भाव भारत - उत्थान,
आलोकित राष्ट्र-भक्ति विहान .
भगत सिंह शाश्वत योगदान,
भास्कर शौर्य बलिदान महान .

कवि कुलवंत सिंह

निकुंज : समीक्षा (1)

विज्ञान के कविता होने का अर्थ है कवि कुलवंत सिंह

कविता विज्ञान नही होती, लेकिन विज्ञान के साथ चले तो इसका व्यक्तित्व कुहरे में खिली धूप की तरह आकर्षक होता है - कवि कुलवंत सिंह की कविताओं को पढ़कर यही कहना ठीक होगा. 'निकुंज' ७७ कविताओं का संग्रह है, जो कविताएं कुलवंत सिंह के संवेदनशील मन और आलोचक मस्तिष्क की धाराओं से मिलकर बनी कविताएं हैं, जो समकालीन हिंदी कविताओं के लिए रसायन की तरह हितकारी हैं. हितकारी इस अर्थ में कि आज की कविताएं किस तरह व्यक्त होकर और क्या कहकर अपने अस्तित्व को बचाए रख सकती हैं, इसका संदेश यां मंत्र इन कविताओं में व्याप्त और बिखरा हुआ है. यह सही है कि आज हम जिस परिवेश में जी रहे हैं,

जिंदगी कदाचित जिसमें अपनी
अंतिम घुटी सांसे ले रही है
जहां
नि:शब्द / रात्रि की नीरवता/स्याह काले
अपने दामन में /लपेटे हुए है - एक टीस

(आंतिम सांसे पृ. ९३)

लेकिन कवि कुलवंत इसी में घुटकर नही रहते, एक सुलझे वैज्ञानिक की तरह रात्रि की नीरवता के कारण और उससे मुक्ति के रहस्यों को खोलते भी हैं और तब इनकी कविताएं भी कालिखपुती भाषाओं में व्यक्त कुंठाओं और और बडबोलेपन की आधुनिक कविताओं का साथ छोड़कर साहित्य के मंगलमय रहस्य लोक से जुड़ जाती हैं. कुलवंत सिंह की कविताएं अंधकार के पेट में रोशनी का सतंभ हैं, जिसमें पूरी दुनिया के लिए ममता है, रोशनी है. इनकी कविताओं का यह वैष्णव व्यक्तित्व उनकी कविताओं में एकदम खुलकर भी सामने आ जाता है,

जीवन को न बांधिए / नियमों से / उसूलों से -
जीवन तो इत्र है / इसको दीजिए महकने (निर्झर ८७)
डूबते सूर्य को देखा.... / डूबते डूबते भी / रश्मियां /
बिखराता जाता / महापुरुषों - सा / कुछ देकर जाता
(सूर्यास्त पृ ८९)

अगर आपत्ति न लगे तो कुलवंत सिंह के कविता संग्रह 'निकुंज' के लिए एक पंक्ति में कहना चाहूं तो कहूंगा कि आज के उबलते परिवेश के महाभारत के बीच दिशाहीन, मतिभ्रम निस्तेज अर्जुनों के समक्ष पढ़ी गई नई 'गीता' है, जिस गीता का मूल्यांकन, काव्यशास्त्र की शब्दशक्ति, रीति-गुण, ध्वनि, और रस की जमीन पर नहीं,

उसमें व्यक्त वृहत्तर जीवन दृष्टि के आधार पर होता है, वैसे कवि कुलवंत सिंह का 'निकुंज' काव्य की ध्वनि को भी समझता है, रीति- गुण की शैली को भी, और शायद बेहतर ढ़ंग से - यही कारण है कि कथ्य के बदलते ही कविता की शैली भी उसी रंग में बदल जाती है. कवि का यह 'निकुंज' किसी एक खास रसवादी का घर नही है, रसों का रास है इस काव्यशाला में - भावों के जितने छोटे बड़े रंग हो सकते हैं - 'निकुंज में सब साथ हैं. अगर ठीक से 'निकुंज' के स्वर को पकड़ने की कोशिश करें तो हमें हिंदी काव्य के आदिकाल से लेकर आधुनिक काल के नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल तक की कविताओं के स्वर गूंजते मिलेंगे. लेकिन सारे स्वरों में एक स्वर सबसे अधिक मुखर है, और वह यह -

आओ खोजें इक नई दुनिया को

जिसमें तुम तुम न रहो, मैं मैं न रहूं बस हम रहें

(नई दुनिया पृ ५०)

हिंदी की समकालीन कविता में यह कुछ अलग सा स्वर है, जो आज की कविताओं में दुर्लभ हो गया है, और जो कवि कुलवंत सिम्ह में आकाशदीप की तरह उठता है.

समीक्षक : डा. अमरेंद्र

संपादक, 'वैखरी'

निकुंज : समीक्षा (2)

आत्मीय संवाद बनाती कविताएं

समय के इस भयावह दौर में जब बाजार तंत्र ने आदमी के संवेदना जगत को क्षत-विक्षत करते हुए उसे एक खंडहर में तब्दील कर दिया हो, जहां केवल खुदगर्जी का आलम चरम पर हो, जहां महज औपचारिक्ताएं ही शेष रह गई हों, जहां केवल निजी स्वार्थ हेतु युद्ध लड़े जा रहे हों, जहां शाश्वत मूल्यों की जमीन लगातार छोटी होती जा रही हो, जहां हत्याएं, बलात्कार की भीषण आंधियां चल रही हों ऐसे विद्रूप समय में एक मुक्त कवि श्री कुलवंत सिंह की कविताओं को पढ़ते हुए राहत मिलती है. वह उन तमाम अव्यवस्थाओं, खामियों के प्रति ही नही बल्कि इंसान और इंसानियत को खत्म कर देने वाली प्रवृत्तियों के खिलाफ, कृति और प्रकृति की दुश्मन बनती जा रही उन तमाम कारकों के खिलाफ उठ खड़ा होता दिखाई देता है और यह शुभ संकेत भी है. वह कम से कम शब्दों का प्रयोग करते हुए एक ऐसा रचना संसार खड़ा करता है, जहं भटकों को, दु:खी प्राणियों को राहत मिलती दिखाई देती है. वह अच्छी तरह जानता है कि परिवर्तन एक सास्वत प्रक्रिया है, एक शाश्वत सत्य है जो किसी भी कीमत पर

किसी के द्वारा रोका नही जा सकता. इस परिवर्तन शीलता के दौर में जाहिर है कि आदमी भी बदलेगा. कवि इस बदलाव को लेकर चिंतित है. उसकी चिंताओं में कुछ प्रश्न सहज रुप से आ खड़े होते हैं. वह प्रश्न करता है कि क्या चांद सूरज धरती भी बदल रहे हैं? जब वे नही बदल पा रहे हैं तो तुम इस प्रवाह की लपेट में आने से क्या अपने आप को बचा नहीं पा रहे हो. प्रकृति का जरा सा भी बदलाव हमारे लिए जीने मरने का प्रश्न बन जाता है. अत: बदलाव किस काम क जो औरों का जीवन खतरे में दाल दे. फिर हमारे अपने क्या आदर्श होने चाहिएं, आदि पर एक कवि मैन रहने के बजाए मुखर होकर अपनी बात हमारे समक्ष रखता है.

संग्रह में एक नही कई ऐसी कविताएं हैं जो हमारे जीवन के साथ सूक्ष्मता से जुड़ी हैं, एवं उनके प्रति यां तो हम घोर लापरवाह हो गये हैं, यां उन्हें द्गीरे धीरे त्यागते चले जा रहे हैं, कवि ने बड़ी बेबाकी से इन पर अपनी कलम चलाई है.

कवि का एक उजला पक्ष और है जिस पर सायद ही किसी की नजर पड़े और वह है संग्रह का वह समर्पित भाव जिसमें अपने माता-पिता तथा आचार्यों को देवरूप मान कर स्तुति की है. और इन्हें ही अपना आराध्य मान

कर काव्याम्जलि अर्पित की है. निश्चय ही यह विनीत भाव उन्हें रजकण से विराततता प्रदान करता है, इसके लिए जितनी भी तारीफ की जाए संभवतह : वह कम ही पड़ेगी. आई आई टी रुड़की से इंजीनियरिंग में बी. ई. करने तथा एक वैज्ञानिक अधिकारी होने के बावजूद श्री कुलवंत सिंह

का रुझान कविताओं में है, साहित्य में है, तो यह हम लोगों का परम सौभाग्य है कि ऐसे ऊर्जावान कवि को हमारे बीच में पाकर हम गदगद हुए बिना नही रह सकते.

कविता मानसिक विलासिता की चीज नही है. वह सामाजिक अपरिवर्तन के औजार का काम करती है.नि:सम्देह उनकी कविताओं का पुरजोर असर पाठकों पर पड़ता है. एक बात औएअ कह देने में मैं अपने आप को रोक नही पा रहा हूँ, और वह यह कि कविता दरअसल उसकी भाषा के सौंदर्य में होती है, कथ्य की संवेदनाओं में होती है, इसलिए कविताओं पर की गई टिप्पणी, उसकी समीक्षा यां आलोचना अपर्याप्त है. कविता अपनी संपूर्ण उपस्थिति में ही आस्वाद से अपना वाजिब और आत्मीय संवाद बना सकती है. आपकी कविताओं में मुझे काफी

कुछ मिला है जिसका वर्णन महज़ अल्फाज़ों में संभव नही. एक अच्छे संग्रह के लिए मेरी बधाईयां शुभकामनाएं स्वीकारें. भविष्य में और भी नायाब चीजें पढ़ने को मिलेंगी.

इन्ही आशाओं और विश्वास के साथ

गोवर्धन यादव

अध्यक्ष, म. प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

जिला इकाई, छिंदवाड़ा, म. प्र.

चिरंतन : समीक्षा (1)

कुलवंत सिंह का मूल भाव उदभोधन है

श्री कुलवंत सिंह की कविताएं पढ़कर यां सुनकर ऐसा नही लगेगा कि यह कोई वैज्ञानिक अधिकारी होंगे. क्योंकि विज्ञान के क्षेत्र में पदार्थ विज्ञान की सर्वोन्नत विधा से यह जुड़े हुए हैं. भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र से. जो संवेदनशीलता इनकी रचनाओं में मिलती है, प्रकृति के सौंदर्य को देखने की जो दृष्टि इनके गीतों में है, सबको सुखी देखने की लालसा इनके उद्दात मन में है और परपीड़ा और विकृत होती मानव संस्कृति के प्रति जो आक्रोश इनमें देखने को मिलता है, वह बहुत ही घनघोर, दृष्टाव्य और हृदयग्राह्य हैं. उदाहरण के लिए छुपा कहां भगवान रचना में कुलवंत सिंह भगवान को ललकारते हैं –

तार तार हुआ समाज,
मनुज बन गया हैवान,
अंधाधुंध सब भाग रहे,
मंजिल का नही ज्ञान,
गमों में सब जी रहे,
खुशी का न नामों निशान,
छुपा कहां भगवान.

प्रकति का वर्णन –

कन कन बरखा की बूंदे,
वसुधा आंचल भिगो रहीं,

बेटी जन्म के प्रति सामाजिक कुसंस्कार –

माँ को कोसा बेटी के लिए जाता,
तानों से जीना मुश्किल हो जाता,
गला घोटकर यां जिंदा दफना दिया जाता.

कुलवंत सिंह प्रतारणा ही नही उदभोधन के भी कवि हैं –

क्षुब्ध उदास मन हर्षित कर लो,
क्षीण हृदय स्पंदित कर लो,
आघात भूल सहज हो लो,
संगीत प्रकृति का बिखरा सुन लो.

और यह –

कुछ अशोक, चंद्रगुप्त, अकबर बन देश को जोड़ जाते हैं कुछ
औरंगज़ेब, मीरजाफ़र, जयचंद बन देशको तोड़ जाते हैं

और आज का युगीन विरोधाभास –

आज के युग में कितनी तरक्की है,
ट्रेनें. हवाई जहाज सड़क पक्की है,
राकेट मिसाईल कारें सितारा होटल हैं,

और

नजरें उठा कर देख लो किसी भी शहर गली में,

कचरे के डब्बों से खाना ढूंढ़ता आदमी,

'हिंदी' कविता कुलवंत सिंह की नई कविता है. लेकिन भावना के स्तर पर वह गीत के समान प्रभावी है-

बाग की बहार है,

राग में मल्हार है,

हिंदी हमारा प्यार है,

इस प्रकार कवि कुलवंत सिंह जो भी लिखते हैं वह सोद्देश्य होता है. वह यह कि समाज को अपसंस्कृति के प्रभाव से. सामाजिक बुराइयों से मुक्त होने का आह्वान करते हैं. ऐसा नहीं कि वह विज्ञान की महत्ता को नही मानते. अपनी कविता एटम और भगवान में वह कण कण में बसता भगवान कहते हैं और यह भी कि जन जन में बसता भगवान. समझें तो बहुत गहरी बात कह गये कवि कुलवंत सिंह. भगवान की सर्वत्रता को बता दिया उन्होंने मगर कण से भी छोटे एटम का परिचय कराते हुए उन्होंने उसमें छिपी शक्ति का अहसास दिलाया है –

एटम खुद है छोटा इतना,

नाभिक का तो फिर क्या कहना,

लेकिन इसे विखंडित करके,

मिलती ऊर्जा चाहो जितना,

इन शब्दों से मनुष्य की सामर्थ्य को भी कवि, भगवान की सर्वत्रता के साथ स्थापित करता है. और यह सब तो अभी इस कवि की शुरुआत है. इन्ही गहराइयों के अतल वितल में डुबकी लगाने की उनकी यह प्रतिभा उन्हें बहुत आगे ले जायेगी.

जब कुलवंत सिंह ने मुझे अपनी कविताओं के लिए कुछ शब्द लिखने को कहा तो मैने चूंकि उन्हे सुना था इसलिए हां कह दी थी और साथ में कुछ कविताएं दे जाने के लिए कहा था. मैने उनकी पांडुलिपि पढ़ी उसके बाद जैसा समझा लिख दिया.

नंद किशोर नौटियाल

अध्यक्ष, महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी

संपादक, नूतन सवेरा

चिरंतन : समीक्षा (2)

शुभाशंसा

कवि कुलवंत सिंह जिन परिस्थितियों में रहकर काव्य साधना करते हैं वह कविता के लिए नितांत प्रतिकूल हैं. इसके बावजूद ये अगर निरंतर आगे बढ़ रहे हैं और एक पर एक संग्रह हिंदी वांग्मय को दे रहे हैं तो यह इनके जीवट होने का हों प्रमाण है.

श्री सिंह का नया काव्य संग्रह **'चिरंतन'** आज के संदर्भों पर एक जीवंत काव्यात्मक टिप्पणी है. **'राम सेतु'** में इन्होंने बड़ी अच्छी बात कही है कि राम हमेशा वर्तमान हैं. वे कभी इतिहास नही हो सकते. इसी तरह 'कोख से' में घर की बेटियों का बहुत ही कारुणिक चित्रण किया है. इन्हे नख शिख का शृंगार भी आकृष्ट करता है. क्योंकि हर युग में जीवन का वह भी एक महत्वपूर्ण पक्ष है. 'प्रकृति' में इन्होंने सदाबहार प्रकृति का बड़ा ही मनोरम दृष्य उपस्थित किया है.

श्री कुलवंत सिंह मुंबई जैसे मायानगर में भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र जैसे महत्वपूर्ण कार्यालय में वैज्ञानिक अधिकारी हैं. इसके बावजूद साहित्य के प्रति

जन्मजात लगाव के कारण ही ये अपने प्रथम संग्रह **निकुंज** से निकलकर **चिरंतन** तक आ पहुंचे हैं.

मैं श्री कुलवंत जी को इस अवसर पर बधाई देता हूंऔर आशा करता हूं कि भविष्य में भी वह इसी प्रकार नये नये काव्य संग्रहों से सरस्वती का भंडार भरते रहेंगे.

मेरी अमित शुभकामनाएं.

डा बुद्धिनाथ मिश्र
मुख्य प्रबंधक राजभाषा
आयल एण्ड नेचुरल गैस कार्पोरेशन लि
देहरादून